आदरणीय बन्धुवर,

जय श्रीराम !

विश्व हिन्दू परिषद केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबन्ध समिति बैठक सूरत गुजरात में 31 दिसम्बर, 2013 तथा 1 व 2 जनवरी, 2014 तक सम्पन्न हुई। बैठक में पारित प्रस्ताव प्रकाशनार्थ संलग्न है।

चम्पतराय
महामन्त्री

केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबन्ध समिति बैठक
31 दिसम्बर, 2013, 01 व 02 जनवरी, 2014 सूरत (गुजरात)
अग्रवाल विकास ट्रस्ट, ''महाराजा अग्रसेन भवन'', सिटी लाईट रोड़, सूरत (गुजरात)

महामन्त्री का प्रतिवेदन (फरवरी से दिसम्बर, 2013)

गुजरात के औद्योगिक नगर सूरत में आज प्रारंभ हो रही प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबन्ध समिति की संयुक्त बैठक में उपस्थित आप सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं का स्वागत है।

फरवरी 2013 में प्रयागराज में सम्पन्न हुए पूर्णकुम्भ के अवसर पर हम एकत्र आए थे। प्रथम बार हमने प्रयास किया कि जिन राज्यों के संत सामान्य रूप से प्रयागराज के कुम्भ में नहीं आते हैं उन्हें प्रयासपूर्वक कुम्भ का दर्शन कराया जाए। हम इस कार्य में सफल हुए। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र, उड़ीसा, बंगाल, असम, अरूणाचल के संत एवं जनजातियों के प्रभावी व्यक्ति,

गुजरात के स्वामीनारायण परम्परा, महाराष्ट्र की वारकरी परम्परा के संत कुम्भ में हमारे शिविर में पधारे। इसी के साथ–साथ जैन, बौद्ध एवं सिख संतों के शिविर हमारे प्रयास से लगे। धर्मसंसद एवं संत महासम्मेलन में 8 हजार संतों की भागीदारी रही। श्रीराम जन्मभूमि को प्राप्त करने के लिए संतों में अपार उत्साह था। अधिवेशन के पूर्व केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक भी सम्पन्न हुई। श्रीराम जन्मभूमि, गोरक्षा, गंगा रक्षा, महिला सम्मान की रक्षा एवं आतंकवाद के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किए गए।

धर्मसंसद ने निर्णय लिया था कि श्रीराम जन्मभूमि को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने एवं आत्मिक बल वृद्धि के लिए ''श्रीराम जय राम जय जय राम'' विजय महामंत्र की तेरह मालाओं का जप वर्ष प्रतिपदा वि.सं. 2070 से अक्षय तृतीया (11 अप्रैल से 13 मई, 2013) तक प्रतिदिन रामभक्त करें। देश में 90,904 स्थानों पर 73,84,525 रामभक्तों ने यह जप किया। यह संख्या पूर्व में लगाए गए अनुमान से अधिक है। महाकौशल, मध्यभारत, आन्ध्र, बंगाल, उत्तराखण्ड के अनेक स्थानों पर 33 दिनों तक 24 घण्टे विजय महामंत्र का अखण्ड जाप समाज ने किया।

बंगाल के 24 परगना जिले के नालियाखाली तथा गोपालपुर ग्रामों को इस्लामिक जेहादियों ने लूटा, आग लगाई, मंदिर तोड़े। विश्व हिन्दू परिषद पीड़ित हिन्दुओं की रक्षा हेतु आगे आया। अन्न, वस्त्र, बच्चों के लिए दूध व अन्य आवश्यक वस्तुएं पीड़ित हिन्दुओं को उपलब्ध कराई गईं। हिन्दुओं का मनोबल बनाए रखने के लिए तालड़ी में एक हिन्दू सम्मेलन हुआ जिसमें 10 हजार हिन्दुओं ने भाग लिया।

गुजरात राज्य का हिन्दू संगम आयोजन कर्णावती में हुआ। गुजरात राज्य के 25,000 हिन्दू सम्मेलन में सम्मिलित हुए। हिन्दू समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, अग्रणी बने इसका आहवान ''हिन्दू ही आगे'' के जयघोष के साथ हुआ।

हैदराबाद नगर में होने वाला रामनवमी उत्सव एवं हनुमान जयन्ती आयोजन तो अब प्रतिवर्ष का स्थाई कार्यक्रम हो गया है जिसमें एक लाख से अधिक हिन्दू युवक एकत्र आते हैं।

इस वर्ष महाराष्ट्र में अकाल से बड़ी गंभीर स्थिति बनी थी। देवगिरि एवं पश्चिम महाराष्ट्र के 12 जिलों के 12500 ग्राम सूखाग्रस्त थे। जालना, संभाजीनगर, अहमदनगर, बीड, परभणी, सांगली तथा धाराशिव जिलों में 5 स्थानों पर चारा एकत्र करने के केन्द्र तथा 8 स्थानों से चारा एवं पानी वितरण की व्यवस्था थी। चारा छावनी में 3500 भारतीय नस्ल के गाय एवं बैल थे। 8 ग्रामों में 5 हजार पशुओं को प्रतिदिन चारा वितरण किया गया। प्रतिदिन 10 टन चारा एवं 22 हजार लीटर पानी वितरित होता था। 2 हजार किसानों को जैविक खाद एवं कीट नियत्रंक निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया। 50 दिन ये शिविर चले।

गाय के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देने के लिए गोविज्ञान परीक्षा का आयोजन किया गया।

सिन्ध पाकिस्तान से अपनी जान बचाकर भारत आनेवाले हिन्दुओं की चिन्ता इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद समाज के सहयोग से कर रहा है। सिन्ध से भारत आने का क्रम अभी रूका नहीं है। इन हिन्दुओं के लिए भोजन, कपड़ा, चिकित्सा, बिस्तर, बर्तन व अन्य आवश्यक सामग्री संग्रह करके उनकी देखभाल की जाती है। धीरे–धीरे सभी को दिल्ली के भिन्न–भिन्न कोनों में किसी न किसी रोजगार में लगाया जाता है वीसा अवधि का नवीनीकरण होने लगा है। अब प्रशासन भी परेशान नहीं करता है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने 76 धार्मिक स्थलों को हटाने का आदेश दे दिया था। इन धार्मिक स्थलों को टूटने से बचा लिया गया है।

केरल में हनुमान जयन्ती पर मोटर साइकिल रैली का आयोजन हुआ जिसमें 1083 मोटर साईकिल तथा 7 अन्य वाहन थे, 2177 बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने इस रैली में भाग लिया। केरल के 18 जिलों में इस रैली ने भ्रमण किया।

हिन्दू समाज की घटती जनसंख्या को रोकने के लिए बांसवाड़ा के हिन्दू समाज का आवाहन किया गया कि जिन परिवारों में चार से अधिक बालक हैं वह अपना एक बालक देश धर्म की रक्षा के लिए भारत माता मंदिर बांसवाडा को प्रदान करे। इस गोकुलम परियोजना के अन्तर्गत 150 बालकों का पालन–पोषण हो रहा है।

हिमाचल में 6–7–8 जुलाई को रामपुर में तीन दिवसीय निःशुल्क नेत्र शिविर लगा, 4500 रोगियों की नेत्र जांच हुई, 85 व्यक्तियों का ऑपरेशन हुआ 1500 व्यक्तियों को औषधि दी गई। पंजाब के राजपुरा में 150 एवं पूर्व आन्ध्र के नेल्लोर में 120 व्यक्तियों ने रक्तदान किया।

16 जून की रात्रि को उत्तराखण्ड की केदारनाथ घाटी एवं हिमकुण्ट साहब में आई दैवीय त्रासदी में परिषद कार्यकर्ताओं ने यथाशक्ति सेवा की। जब उत्तराखण्ड में सेना और

भारत तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा आपदा में फंसे तीर्थयात्रियों को वापस लाने का कार्य प्रारंभ हो गया तब हरिद्वार, देहरादून, ऋषिकेश, कोटद्वार, पीपलकोटी में वापस लौटने वाले तीर्थयात्रियों को भोजन, चिकित्सा प्रदान की। लगभग 60 हजार व्यक्तियों को भोजन कराए जाने का अनुमान है। मातृशक्ति की ओर महिला स्वाबलम्बन के 5 केन्द्र प्रारंभ किए हैं।

बांसवाडा परियोजना के विद्यालयों से पढकर वापस अपने घर त्रिपुरा व मिजोरम में जानेवाले युवकों ने 407 ग्रामों में विद्यालय प्रारंभ किए हैं। यह क्षेत्र आतंकवाद से ग्रस्त है। विद्यालयों के परिणामस्वरूप ऐसे 450 युवक संपर्क में आए हैं जो कभी उग्रवाद में लिप्त थे। इन्होंने आतंकवाद छोड़कर शिक्षा के माध्यम से अपने समाज की सेवा करने का विचार बनाया है। ऐसी अनेक जातियों में घरवापिसी के कार्यक्रम भी हुए। त्रिपुरी, हालम, जमातिया, रियांग, चकमा आदि जनजातियों में कार्य पहुंचा। 103 ग्रामों के 1728 व्यक्ति पुनः अपने पूर्वजों की धारा में वापस आ गए। द0तमिलनाडु के तिरूनेलवेल्ली में भी 350 ईसाइयों ने भी अपने पूर्वजों की परंपराओं को स्वीकार किया। तमिलनाडु के लिए यह एक उल्लेखनीय कार्य है। आन्ध्रप्रदेश में घरवापसी का कार्य निरंतर प्रगति पर है।

हरिद्वार से गंगा जल सम्मानपूर्वक अपने कंधों पर लेकर अपने–अपने स्थानों पर हिन्दू समाज श्रावण मास में पदयात्रा करते हुए जाता है। लाखों की संख्या में हिन्दू इसमें भाग लेता है। ये कांवडिए कहलाते हैं। इन कांवडियों की सेवा के लिए मेरठ, हापुड, शामली, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, गाजियाबाद, बुलन्दशहर में 32 स्थानों पर सेवा शिविर लगाए, प्रसाद, चिकित्सा, विश्राम, रात्रिनिवास, जल आदि की सेवा प्रदान की गई। अनुमानित 32 हजार कावंडियों की सेवा हुई।

श्रीराम जन्मभूमि के न्यायिक पक्ष एवं तथ्यों को बताने के लिए पूज्य संतों ने राष्ट्रपति महोदय श्री प्रणव मुखर्जी जी से 30 मई को भेंट की। जून मास में हरिद्वार में मार्गदर्शक मण्डल की बैठक हुई थी। अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा में किसी प्रकार की कोई मस्जिद न बने, इसके लिए अयोध्या के चारों ओर 84 कोसीय परिक्रमा मार्ग पर संतों की पदयात्रा का 20 दिवसीय कार्यक्रम 25 अगस्त से 13 सितम्बर, 2013 तक सम्पन्न हुआ। उत्तरप्रदेश सरकार ने पदयात्रा को प्रतिबंधित किया तथापि सभी प्रांतों से संत अयोध्या पहुंचे तथा अयोध्या से भी संत प्रतिदिन निर्धारित स्थान पर पहुंचे। संतों की स्थानीय रामभक्तों की प्रतिदिन गिरफ्तारी हुई, सैकड़ों संतों ने गिरफ्तारी दी परन्तु सभी घोषित कार्यक्रम सम्पन्न किए गए। अयोध्या की वास्तविकताओं को स्वयं देखने के लिए दक्षिण भारत के संतों ने अपने भक्तों के साथ अयोध्या के चारों ओर पंचकोसी परिक्रमा की। यह कार्यक्रम भी 20 दिन चला। दक्षिण से प्रतिदिन संत और रामभक्त आते थे। एक दिन परिक्रमा और एक दिन दर्शन करके वापस जाते थे। यह कार्यक्रम 22 सितम्बर से 13 अक्टूबर, 2013 तक चला। वाल्मीकि जयन्ती 18 अक्टूबर को संपूर्ण भारत में श्रीराम जन्मभूमि को प्राप्त करने के लिए तथा अयोध्या में किसी प्रकार का बाबर का स्मृतिचिह्न अथवा कोई इस्लामिक सांस्कृतिक केन्द्र नहीं बनने देने का संकल्प संपूर्ण भारत में लिया गया। आसपास के जनपदों से रामभक्त संकल्प लेने के लिए बडी संख्या में अयोध्या की ओर चले। हजारों लोग पकडे गए तो भी लगभग पांच हजार रामभक्त अयोध्या पहुंच गए जो अयोध्या के 30 मंदिरों में छिपे रहे, पकडे गए। 432 रामभक्तों को ही पुलिस ने 36 घण्टे तक कारावास में रखा शेष को तो फैजाबाद की पुलिस लाइन से सायंकाल को ही छोड दिया गया। इन कार्यक्रमों से राम जन्मभूमि के बारे में व्यापक जागरूकता निर्माण हुई है। जो संत इस अभियान में अयोध्या की ओर चले, रास्ते में पकडे गए अथवा अयोध्या पहुंचकर पकडे गए ऐसे सभी संतों का दो दिवसीय सम्मेलन 19–20 अक्टूबर को दिल्ली में

सम्पन्न हुआ, 490 संत उपस्थित हुए। राम जन्मभूमि की मुक्ति का संकल्प लेकर वापस अपने राज्यों को गए।

आसनसोल जिले में पांच हजार युवकों का सम्मेलन हुआ।

बैंगलोर में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर एक मेले का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष राधा और कृष्ण के वेश में चार हजार बच्चों ने भागीदारी की। बच्चों के माता–पिता भी इस मेले में थे। आयोजन विश्व हिन्दू परिषद करता है।

अण्डमान निकोबार में मा0 प्रवीणभाई का प्रवास हुआ। कार्यकर्ताओं को उत्साह मिला।

7 से 15 नवंबर, 2013 तक अयोध्या में दुर्गावाहिनी का अखिल भारतीय शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न हुआ। दुर्गाअष्टमी पर दुर्गासप्तशती के पाठ दुर्गावाहिनी की ओर से सम्पन्न हुए। यह कार्यक्रम धीरे–धीरे स्थायित्व प्राप्त कर रहा है। पितृपक्ष में गया में भी 15 दिवसीय सेवा शिविर लगाया गया। कानपुर में युवा, उद्यमी, व्यवसायी और उच्च तकनीकि शिक्षा प्राप्त युवकों तथा कॉलेज विद्यार्थियों का वर्ग सम्पन्न हुआ।

किश्तवाड में 9 अगस्त को ईद के दिन नमाज पढने के बाद मुस्लिम जेहादियों ने हिन्दुओं की दुकानों, घरों पर आग लगाई। 100 से अधिक दुकानें क्षतिग्रस्त हुई, जला दी गई। यह सब डरा धमका कर हिन्दुओं को भगाने का षडयन्त्र था। परिषद ने जम्मू बंद की घोषणा की। सरकार पर दबाव आया और सरकार ने अपने एक मुस्लिम मंत्री को मंत्रिमण्डल से इस दोष में हटाया। दुर्घटना की जांच के लिए जांच समिति गठित हुई और पीडितों को आर्थिक सहयोग का वचन सरकार ने दिया। इसी प्रकार रियासी जिले के बिहारा गांव में भी मुसलमानों के कब्जे से हिन्दुओं की सम्पत्ति मुक्त कराई गई। जम्मू जिले के बिलावर स्थान पर भी एक देवस्थान को मुस्लिमों ने अपने कब्जे में लेने का प्रयास किया। परिषद ने विरोध प्रदर्शन किया। सफलता प्राप्त होने का अनुमान है।

अजमेर में किन्नर दरगाह पर जाते थे। इस बार कार्यकर्ताओं ने संपर्क किया। किन्नरों को देवी के मंदिर में आने का निमंत्रण दिया। किन्नर दरगाह पर नहीं गए और देवी के मंदिर में पूजा की।

गोरक्षा विभाग की ओर से 120 स्थानों पर पंचगव्य चिकित्सा शिविर आयोजित हुए। 2000 से अधिक मरीजों का उपचार किया गया। छत्तीसगढ के जसपुर जिले में गो संवर्धन जन जागरण पदयात्रा निकाली गई। 20 गांवों में व्यापक संपर्क हुआ।

समरसता निर्माण करने के लिए देश में स्थान–स्थान पर गोष्ठियां, कथाएं आयोजित की गईं। अनेक प्रांतों में प्रांतीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठकें सम्पन्न हुईं। 6 दिसम्बर अम्बेडकर जी की पुण्य तिथि पर शौर्य दिवस के आयोजन हुए। बजरंग दल के त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम, स्थान–स्थान पर घरवापिसी, कसाईयों से गौ की रक्षा, अपहृत कन्याओं को छुडाना, सम्मानपूर्वक समाज में अपने घरों में पहुंचाना, स्थान–स्थान पर कार्यकर्ता करते हैं।

हिन्दू हेल्प लाईन की अखिल भारतीय बैठक सोमनाथ में सम्पन्न हुई। 34 प्रांतों के 85 कार्यकर्ता रहे। प्रांत संयोजक, तीर्थ संयोजक, वकील व डॉक्टर सम्मिलित थे। 16 प्रांतों के 68 स्थानों पर 4,940 यूनिट रक्तदान हुआ।

जोधपुर प्रांत में श्री रामदेवजी महाराज की भव्य रथयात्रा सम्पन्न हुई। 187 ग्रामों के 123 स्थानों पर धर्मसभाएं हुई जिसमें 19,239 नागरिकों ने भाग लिया। दर्शन–पूजन करने वाले भक्तों की संख्या 1,46,995 थी। झाबुआ में कांवड यात्रा में 10,000 वनवासी शिवभक्त उपस्थित हुए। फूलबनी उड़ीशा में स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती बलिदान दिवस पर 5,000 नागरिकों की सभा हुई।

विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा सेवा व रक्षा के लिए किए जाने वाले समस्त कार्यों का संकलन और वर्णन दोनों ही कठिन है तथापि कुछ किए गए कार्य मैंने आप सबके सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है। आप सबसे मेरा आग्रह है कि सभी उल्लेखनीय कार्यों का वर्णन लिखित रूप में फोटो सहित यदि आप दिल्ली कार्यालय को भेजने में सजग रहेंगे तो इन कार्यों को पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समाज के सम्मुख रख सकेंगे ताकि अन्य कार्यकर्ताओं को भी इससे प्रेरणा मिले।

चम्पत राय

(चम्पतराय)
अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री

ॐ

केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबन्ध समिति बैठक
31 दिसम्बर, 2013, 01 व 02 जनवरी, 2014 सूरत (गुजरात)
अग्रवाल विकास ट्रस्ट, 'महाराजा अग्रसेन भवन', सिटी लाईट रोड़, सूरत (गुजरात)

प्रस्ताव

विषय : भारतीय जीवनमूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा

वर्तमान काल में भारत के अन्दर कुछ असामाजिक व्यक्तियों के कुकृत्यों को देखकर विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल अत्यन्त चिन्तित है। आज समाज में दुष्कर्म, भ्रष्टाचार एवं विषमता का दौर चल रहा है। मानव कुकर्मी एवं अर्थप्रिय बनकर धर्म–संस्कृति की श्रेष्ठताओं से परे हटकर अपसंस्कृतियुक्त बना राष्ट्र की पावन धाराओं को प्रदूषित कर रहा है।

भारत की महान संस्कृति **'मातृवत परदारेषु'** की रही है। इस देश का वासी **'परद्रव्येषु लोष्ठवत्'** मात्र मानता ही नहीं था बल्कि इन मूल्यों के अनुसार जीवन में व्यवहार करता था। इस देश में भ्रष्टाचार, दुराचार और शोषण की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी क्योंकि प्रत्येक आबाल–वृद्ध **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की मान्यता द्वारा प्रत्येक देशवासी को अपना आत्मीय मानकर सभी के साथ भगवत्–भाव से जीता था। परन्तु वर्तमान के तकनीकि उपकरणों से जहाँ श्रेष्ठ जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं वहीं ये उपकरण छोटे–बड़े सभी मानवों में उच्छृंखल भावों को भड़का रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप जहाँ भारतवासी प्रत्येक स्त्री में माँ का दर्शन कर उसे सम्मानित व श्रद्धावनत होता था वहीं इन उपकरणों से प्रसारित प्रदूषण ने दुराचार को हद तक पहुँचा दिया है। आज तो दैवीरूपा कन्याएँ भी सुरक्षित नहीं हैं। जनमन सांस्कृतिक व सामाजिक मान–मर्यादाओं से हटकर पतनोन्मुख बना दिखाई देता है।

प्रन्यासी मण्डल की मान्यता है कि इस भयानक पतन से देशवासी को बचाना है तो शिक्षा–संस्कारों द्वारा श्रेष्ठ मूल्यों को शैशव अवस्था से ही समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना होगा। विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इन मूल्यों से सम्बंधित सामग्रियों को जोड़ना होगा और पश्चिमी संस्कृति का जो आक्रमण देशवासी के वेशभूषा, खानपान, दृश्यदर्शन के साथ ईसाई मिशनरी और अनेक संस्थाओं द्वारा संचालित इंग्लिश मीडियम विद्यालयों द्वारा पश्चिमीकरण का जो दौर चल रहा है, उसे नियमपूर्वक सम्पूर्ण रूप से नियंत्रित करना

होगा। इसके साथ ही प्रत्येक भारतीयों को अपने–अपने घरों को संस्कार मन्दिर के रूप में परिणित करना होगा। आधुनिक साधनों को भी हिन्दू संस्कृति व मानवीय मूल्यों के प्रचार की जिम्मेदारी लेनी होगी व परम्परागत प्रवचन, कथा–कीर्तनों में भी वर्तमान की अवस्था में परिवर्तन करने हेतु आग्रहपूर्वक श्रेष्ठ मूल्यों के विषय जोड़ना होगा।

प्रन्यासी मण्डल की अपेक्षा है कि मातृशक्ति भी अपनी कन्याओं में स्वाभिमान जागृत करें और शिक्षित बनने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें तथा संपूर्ण घर–परिवार में सत्संग का वायुमण्डल निर्माण कर सभी को संस्कारित बनावें। इसके साथ ही अनाचारी, गुण्डा तत्वों का सामना करने का साहस और प्रतिकार करने की हिम्मत भी नारियों व कन्याओं में जगाएं। इसके अलावा हर कन्या को कठोर संयमी एवं भावी गृहस्थी बनने तक सुकन्या बने रहने की शिक्षा भी दें तथा सद्गृहस्थ जीवन के आदर्श भी उनके सामने रखें। इस मार्गदर्शन से एक कन्या वीरांगना और ज्ञान गरिमा के साथ सुशिक्षित बन राष्ट्रीय कर्तव्य पूर्ति में वह पुरुषों के साथ कदम मिलाकर चल सकेगी और भारत माता के पूजा की थाली में सम्मिलित होकर माँ की आरती में अपना स्वर गुंजायमान कर सकेगी।

प्रन्यासी मण्डल भारत के नेतृत्व से आग्रह करता है कि आदर्शहीनता को त्यागकर भारतीय मूल्यों पर विश्वास रखकर देश में भावी पीढ़ी का त्यागपूर्वक नेतृत्व करें और सामाजिक प्रदूषण व अपसंस्कृति निर्माणकारी सभी व्यवस्थाओं को मूल्याधिष्ठित करें तभी और तभी नारी माँ रूप में व प्रत्येक कन्या दैवी रूप में तथा प्रत्येक भारतवासी यथार्थ आत्मीय रूप में व्यवहारकर्ता बनेगा जिससे यह भारत पुनः विश्व के सामने सच्चे अर्थ में हिन्दू संस्कृति युक्त श्रेष्ठ राष्ट्र रूप में स्थापित हो सकेगा।

प्रस्तावक : श्री धर्मनारायण शर्मा, दिल्ली

अनुमोदक :.....

दिनांक 1 जनवरी, 2014

प्रस्ताव

विषय : भारत में जनसंख्या असंतुलन, विदेशी घुसपैठ, समान नागरिक संहिता विषय को समाप्त करने का षड्यंत्र व हिन्दुओं का धर्मान्तरण राष्ट्र के सामने भयावह समस्या

भारत में मुस्लिम व ईसाई जनसंख्या का विस्फोट राष्ट्रीय सहजीवन, राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए स्थायी रूप से गम्भीर समस्याओं का कारण बन चुका है। 1881 से 1941 तक प्राप्त जनसंख्या आँकड़ों के अनुसार अविभाजित भारत में हिन्दू जनसंख्या में 5.53% (75.09 से 69.46) की गिरावट इन 60 वर्षों में हुई जब कि इस अवधि में मुस्लिम जनसंख्या में 4.31% की वृद्धि हुई। 1941 की जनगणना के अनुसार भारत में जब केवल 24.28% मुसलमान थे, तब पृथक राष्ट्र पाकिस्तान की माँग उठाई गई। 16 अगस्त, 1946 को सीधी कार्यवाही (Direct Action) का कोहराम मचाकर वर्षभर हिन्दुओं का भीषण नरसंहार किया गया और अन्ततः 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान बना दिया गया और देश विभाजित हो गया। स्वतंत्रता के बाद 1951 से 2011 तक के 60 वर्षों में हिन्दू जनसंख्या में लगभग 4% की गिरावट हुई जब कि इस अवधि में मुस्लिम जनसंख्या में 4% की वृद्धि हुई। वर्तमान भारत में मुस्लिम जनसंख्या लगभग 15 करोड़ है जिसमें बाँग्लादेशी व पाकिस्तानी घुसपैठियों की संख्या जोड़ दी जाए तो अनुमानतः 20 करोड़ का आँकड़ा बनता है। ऐसे लगभग 15 राज्य हैं जहाँ मुस्लिम बहुलता की ओर बढ़ने वाले जिलों की संख्या

भी लगभग 50 पहुँच चुकी है। बाँग्लादेश व पाकिस्तान के बाद अब म्यांमार (Burma) से भी मुस्लिम (रोहियांग) घुसपैठ प्रारम्भ हो चुकी है। भारत में अभी तक केवल जम्मू कश्मीर ही ऐसा राज्य है जहाँ मुस्लिम जनसंख्या 50% से अधिक है। परिणाम सामने है कि वहाँ से 5 लाख कश्मीरी हिन्दुओं (पंडितों व अन्य) को राज्य से बाहर कर दिया गया जो लगभग 24 वर्षों से दिल्ली, जम्मू आदि स्थानों पर शरणार्थी जीवन जीने को विवश हैं। स्वतंत्र भारत में नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय ईसाईबहुल राज्य बन चुके हैं। 1951 से 2011 तक के आँकड़े बताते हैं कि नागालैण्ड 46% से 92%, मेघालय 22.6% से 70% व मिजोरम वर्तमान में 90% ईसाईबहुल राज्य बन चुके हैं जहाँ से रियांग हिन्दुओं (लगभग 50 हजार) को शरणार्थी जीवन जीने को विवश कर दिया गया है। मणिपुर व अरुणाचल को अब ईसाईबहुल बनाने का षडयन्त्र जारी है। मणिपुर में 11% से 40% ईसाई वृद्धि हुई है। केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र, अण्डमान, असम, प.बंगाल, बिहार, उ0प्र0 सहित अन्य कई राज्य मुस्लिम व ईसाई संख्यावृद्धि से उत्पीड़ित हैं।

प्रन्यासी मण्डल की मान्यता है कि मुस्लिम व ईसाई जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण भारत में 'समान नागरिक संहिता' को क्रियान्वित न किया जाना भी है। 1956 में हिन्दू एक्ट लागू करके हिन्दुओं को केवल एक पत्नी रखने का अधिकार दिया गया जबकि मुस्लिमों को चार पत्नी रखने के शरीयत कानून पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कई बार (1986, 1995,.....) विभिन्न केन्द्र सरकारों को संविधान के अनुच्छेद 44 के अनुसार समान नागरिक संहिता लागू करने का निर्देश दिया गया परन्तु संप्रग, राजग व अन्य सरकारें भी इस कानून को आज तक लागू नहीं कर सकीं। इसके साथ ही विश्व के अनेक मुस्लिम व ईसाई देशों से अरबों डालर भारत में हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन करने के लिए भेजे जाते हैं। भारत के लगभग प्रत्येक जिले में ईसाई पादरी व जमायत के मौलाना धर्मान्तरण कार्य में लगाये गये हैं। इस प्रकार मुस्लिमों व ईसाइयों की अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि होना, विधर्मियों द्वारा करोड़ों की संख्या में घुसपैठ करना, समान नागरिक संहिता का लागू न होना तथा हिन्दुओं का बड़े स्तर पर धर्मान्तरण किया जाना सभी राष्ट्रभक्तों के लिए गम्भीर चिंता का विषय है।

<u>समस्या का समाधान</u>

केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल भारत सरकार से आग्रह करता है कि छद्म धर्मनिरपेक्ष राजनीति की छाया में हिन्दू उन्मूलन के लिए जो घातक षडयंत्र किये जा रहे हैं, उन्हें निर्मूल करने हेतु एकमात्र उपाय है – सबके लिए समान अधिकार व समान कानून की व्यवस्था संविधान के अनुच्छेद 14 व 15 के अनुसार बनाई जाये। अनुच्छेद 44 के अनुसार समान नागरिक संहिता लागू करने में सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों का पालन किया जाए तथा अनुच्छेद 25 के अनुसार धर्मान्तरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये अन्यथा यदि 15% मुस्लिम वोट बैंक भारत की राजनीति में प्रभावी बन सकता है तो 82% हिन्दू वोट बैंक भी भारत की राजनीति पर अपना वर्चस्व अवश्यमेव स्थापित कर सकता है। अतः जाति व पंथ की दलीय राजनीति तथा भाषा व क्षेत्र की पृथकतावादी राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता का शंखनाद करने वाली सर्वव्यापी राजनीति का ब्रह्मास्त्र ही राष्ट्रभक्तों के विजय पथ को प्रशस्त कर सकेगा।

प्रस्तोता : श्री दिनेशचन्द्र त्यागी, दिल्ली
अनुमोदक : श्री बजरंग लाल बागडा, गुडगांव

दिनांक : 02 जनवरी, 2013

प्रस्ताव

विषय : इस्लामिक विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में

जगतप्रसिद्ध भगवान तिरूपति के मंदिर से मात्र 11 कि0मी0 की दूरी पर तोण्डवाडा ग्राम में सभी स्थापित विधि–नियमों की अवहेलना कर बन रहा मुस्लिम महिला विश्वविद्यालय का भवन धर्मप्राण, शान्तिप्रिय हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए चिन्ता का विषय बन गया है। ज्ञातव्य है कि तिरूपति–तिरूमाला के सात पवित्र पर्वतों के मध्य में अवस्थित मंदिर में प्रतिष्ठित भगवान बाला जी के दर्शनार्थ प्रत्येक वर्ष लगभग 2 करोड़ हिन्दू भक्त पहुंचते हैं। क्षेत्र की पवित्रता एवं दर्शनार्थियों द्वारा अबाधित एवं सुरक्षित तीर्थयात्रा को सुनिश्चित करने के लिए आन्ध्रप्रदेश सरकार ने समय–समय पर कानून, यथा अध्यादेश संख्या 3/2007 जी0ओ0एम0एस0 नं0 746, दिनांक 2/6/2007, जी0ओ0एस0एस0 संस्था 742 दिनांक 2/6/2007 निर्मित्त कर कुछ मानक तय किए हैं। शेख नवहीरा नाम की मुस्लिम महिला द्वारा प्रतिबंधित क्षेत्र में उपरोक्त विश्वविद्यालय का निर्माण इन कानूनों का सरासर उल्लंघन है।

आश्चर्य का विषय है कि उपरोक्त निर्माण त्रिभुजाकार उस पवित्र क्षेत्र के मध्य में किया जा रहा है जिसके तीनों शीर्ष पर हिन्दुओं के तीन प्रसिद्ध देवस्थान यथा गुरप्पा मंदिर, त्तिमप्पा मंदिर और अगस्त्य मुनि आश्रम अवस्थित हैं। हिन्दुओं की ऐसी पवित्रतम भूमि में इस्लामिक गतिविधियों के निमित्त भवन निर्माण स्पष्टतः एक साम्प्रदायिक हठ है तथा हिन्दुओं को अपमानित करने के उद्देश्य से है। यह भी विचारणीय है कि अभी–अभी 5/10/2013 को इसी क्षेत्र में अवस्थित पुत्तूर नामक स्थान में कुछ आतंकवादियों को पुलिस ने तिरूपति में ब्रह्ममहोत्सव के समय गड़बड़ी फैलाने के उद्देश्य से विस्फोटक ले जाते पकड़ा था। ऐसे संवेदनशील स्थान पर एक विराट मुस्लिम काम्पलेक्स का निर्माण भविष्य के गर्भ में पल रहे अमंगल की सूचना है।

कहते हैं कि पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं। उपरोक्त प्रसिद्ध गुरप्पा मंदिर के नाम पट थोण्डवाडा ग्राम के लोग सडक के किनारे लगाना चाहते थे। फिर क्या था, इसी दस सितम्बर को शेख नवहीरा के साथ 300 मुस्लिम महिलाएं इस जिद पर अड गयी कि वे मंदिर का नामपट नहीं लगाने देंगे।

उपरोक्त परिस्थितियों के आलोक में 'तिरूपति तिरूमाला संरक्षा समिति' ने निम्नांकित लब्ध प्रतिष्ठित महानुभावों की एक तथ्य अनुशीलन समिति **(Fact finding Committee)** का निर्माण किया है।

01. न्यायमूर्ति पर्वत राव, पूर्व न्यायाधीश उच्च न्यायालय आन्ध्रप्रदेश
02. टीएस राव आईपीसी (अवकाशप्राप्त)
03. श्री उमा महेस्वर राव, आईएएस (अवकाशप्राप्त)

इस समिति को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भवन निर्माण के लिए विधिवत अनुमति भी नहीं ली गई है। साथ ही सरकारी जमीन और देवस्थान की जमीन को कब्जा करके यह भवन निर्माण हो रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद का केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एकमत से आग्रहपूर्वक अपना मंतव्य प्रकट करता है कि ऐसी परिस्थिति में जबकि पूरे देश में हिन्दुओं के लिए निर्बाध और सुरक्षित तीर्थयात्रा का सुयोग दुर्लभ होता जा रहा है, सर्वत्र एक विशेष धर्मावलम्बियों के द्वारा विधि व्यवस्था की समस्या उत्पन्न की जा रही है तथा समाज का वह वर्ग दिन–प्रतिदिन हिन्दुओं के प्रति असहिष्णु और उत्पीड़क बनता जा रहा है, जगत प्रसिद्ध बाला जी के पवित्र मंदिर से मात्र ग्यारह कि0मी0 की दूरी पर किए जा रहे इस गैरकानूनी

इस्लामी महिला विश्वविद्यालय के भवन निर्माण को आन्ध्र सरकार प्रतिबंधित करे। आन्ध्र सरकार यह नहीं भूले कि वह मात्र मुसलमानों की नहीं अपितु हिन्दुओं की भी सरकार है और इसलिए हिन्दुओं के मंदिर की पवित्रता तथा तीर्थयात्रियों की सुरक्षा भी उसका कर्तव्य है।

प्रस्तावक : राम राजू, भाग्यनगर
अनुमोदक :.....

दिनांक : 02 जनवरी, 2013